nandgaon times may-14-2.qxd 5/13/2024 11:58 PM Page 1

मोबाइल में आंखें गड़ाये रहने से रोगग्रस्त... पृष्ठ 2 | कक्षा 10वीं- 12वी का प्रतिशत... पृष्ठ 3

नांदगांव टाइम्स

नोट :- मकान, फ्लैट, दुकान, गोदाम किराये पर लेने एवं देने की विशेष व्यवस्था साथ ही जमीन प्लाट हेतु डायवर्सन के दस्तावेज व ऋण पुस्तिका बनवाने के कार्य की सुविधा।

।। जय श्री जलाराम ।।

श्री जलाराम प्रॉपर्टी डीलर

उचित दर पर मकान, फ्लैट, डुप्लेक्स, दुकान, ऑफिस, गोदाम, जमीन, प्लाट की खरीदी-बिक्री हेतु संपर्क करें।

ऑफिस- बागड़ी ब्रदर्स के बाजू में, रामाधीन मार्ग, राजनांदगांव।

मो: 98274-61508, 83192-88559

मंगलवार, 14 मई 2024, राजनांदगांव | आरएनआई 30910/76 | वर्ष 48, अंक 211, पृष्ठ 04, मूल्य 2 रुपए

पीएम मोदी का काशी में मेगा रोड शो शुरू, उमड़ा जनसैलाब, मंगलवार को करेंगे नामांकन

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को काशी पहुंचे। उन्होंने रोड शो की शुरुआत बीएचयू गेट पर महामना मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ शुरू किया। वह अस्सी घाट के रास्ते गोदौलिया से होते हुए काशी विश्वनाथ मंदिर तक जाएंगे। यहां दर्शन-पूजन करेंगे। प्रधानमंत्री के रोड शो में काफी भीड़ उमड़ी है। लंका चौक से पीएम मोदी के रोड शो की शुरुआत हो गई है। रोड शो में भगवा कलर की साड़ी पहनी महिलाएं शामिल हैं। हजारों की संख्या में समर्थक शामिल हुए हैं। पीएम मोदी के रोड शो का भव्य स्वागत किया जा रहा है। सड़क के दोनों तरफहर वर्ग के लोग उनके स्वागत में पुष्प वर्षा कर रहे हैं। वाराणसी के मंगल केवट ने पीएम मोदी के रोड शो के पूर्व स्वच्छता का संदेश दिया तो वहीं नन्हे-मुन्हे समर्थकों ने पीएम मोदी का मुखौटा लगाकर साइकिल से भ्रमण किया। पार्टी सूत्रों ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी के नामांकन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत भाजपा शासित और गठबंधन वाले 12 राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल होंगे। इसके अलावा अन्य केंद्रीय मंत्री और भाजपा के पदाधिकारियों की भी मौजूदगी रहेगी। नामांकन के पहले सुबह करीब नौ बजे पीएम दशाश्वमेध घाट पर मां गंगा को नमन कर सकते हैं। उनका क्रूज़ से नमो घाट तक जाना भी प्रस्तावित है। यहां से प्रधानमंत्री काल भैरव मंदिर, वहां से फिर नामांकन करने कलेक्ट्रेट जाएंगे। नामांकन के बाद रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर में कार्यकर्ताओं के साथ बैठक भी करेंगे। मंगलवार को प्रधानमंत्री मोदी काशी कोतवाल

से अनुमति लेकर नामांकन करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी मंगलवार को पड़ने वाली गंगा सप्तमी के दिन स्नान कर मां गंगा को नमन भी कर सकते हैं। ज्योतिषाचार्य पं. ऋषि द्विवेदी की मानें तो शास्त्र के अनुसार गंगा सप्तमी और नक्षत्र राज पुष्य नक्षत्र का संयोग के साथ ही रवि योग ग्रहों की अच्छी स्थितियों का निर्माण कर रहा है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन कोई भी कार्य करने से अभिष्ट की सिद्धि होती है। पुष्य नक्षत्र में यदि किसी काम को किया जाए तो उसमें कार्य सिद्धि तय मानी जाती है। ऐसा माना जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी इस विशेष संयोग में ही अपना नामांकन करेंगे। भाजपा नेताओं के मुताबिक नामांकन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे, राजस्थान के सीएम भजन लाल शर्मा, असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा शर्मा, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत, सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा शामिल होंगे। इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी नामांकन में शामिल होंगे। इसके अलावा एनडीए के प्रमुख घटक लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी, लोजपा प्रमुख चिराग पासवान, अपना दल (एस) की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल, सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर आदि मौजूद रहेंगे।

लोकसभा चुनाव का चौथा चरण : शाम 5 बजे तक 62 प्रतिशत से ज्यादा मतदान

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण के तहत देश के 10 राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों की 96 लोकसभा सीटों पर हो रहे मतदान में शाम 5 बजे तक 62 प्रतिशत से ज्यादा (62.31 प्रतिशत) मतदान हो चुका है। मतदान के राज्यवार आंकड़ों की बात करें तो, शाम 5 बजे तक सबसे ज्यादा पश्चिम बंगाल में 75.66 प्रतिशत मतदाता वोट कर चुके हैं। वहीं, आंध्र प्रदेश में 68.04 प्रतिशत और मध्य प्रदेश में 68.01 प्रतिशत मतदाता शाम 5 बजे तक अपने मताधिकार का प्रयोग कर चुके हैं। अन्य राज्यों के मतदान प्रतिशत की बात करें तो, शाम 5 बजे तक झारखंड में 63.14, ओडिशा में 62.96, तेलंगाना में 61.16, उत्तर प्रदेश में 56.35, बिहार में 54.14, महाराष्ट्र में 52.49 और जम्मू कश्मीर में 35.75 प्रतिशत मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर चुके हैं।

राहुल गांधी मैरिज ... जल्द शादी करेंगे राहुल गांधी, सबके सामने किया ऐलान

रायबरेली। कांग्रेस प्रत्याशी राहुल गांधी की शादी का उनके चाहने वालों को बेसब्री से इंतजार है। आज राहुल गांधी ने रायबरेली में जनसभा की, तब उनके साथ बहन प्रियंका गांधी भी मौजूद रहीं। राहुल ने कहा- रायबरेली मेरी दो माताओं की कर्मभूमि है। इसीलिए मैं यहां से चुनाव लड़ने आया हूं। सभा में राहुल से पूछा गया कि, शादी कब करेंगे। राहुल ने जवाब में कहा- जल्दी करनी पड़ेगी। राहुल इस बार रायबरेली और वायनाड से चुनाव लड़ रहे हैं। दरअसल आज की जनसभा में राहुल गांधी से यह सवाल एक बच्चे ने कियाथा। इस सवाल का जवाब देते हुए राहुल गांधी ने कहा, 'अब लगता है कि जल्द ही करनी पड़ेगी।' कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने आज रायबरेली में घर-घर चुनाव अभियान किया।

ब्रह्मात्म तत्त्व त्वन्ता, अहन्ता तथा इदन्ता से विरहित है अद्वितीय - पुरी शंकराचार्य

अरविन्द तिवारी की रिपोर्ट

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। हिन्दूओं के सार्वभौम धर्मगुरु एवं हिन्दू राष्ट्र प्रणेता पूज्यपाद पुरी शंकराचार्य स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वतीजी महाभाग अद्वय ब्रह्म ईश्वर की महत्ता की चर्चा करते हुये उद्धृत करते हैं कि आत्मा के अज्ञान से द्वैत समुत्पन्न होता है और आत्मा को अपने से भिन्न - सरीखा अन्य रूप से देखता है , परन्तु जब अद्वय आत्मा का बोध सुलभ होता है , तब आत्म रूप से ही सबको देखता है , आत्मा से भिन्न अणुमात्र भी नहीं देखता। यह जगत् अनुभव गोचर और व्यवहार साधक परिलक्षित होने पर भी उत्तर क्षण में बाधित स्वप्न तुल्य असत् ही है। घट - पट आदि के तद्वत् शब्द - स्पर्श आदि के ज्ञान की स्वत: अद्वयता, नित्यता, स्व प्रकाशता और विभुता उसकी आत्म रूपता में हेतु है। सच्चित स्वरूप आत्मा की पर प्रेमास्पदता उसकी परमानन्द रूपता में हेतु है। उक्त रीति से अनुत्पन्न, अनश्वर, अपरतन्त्र और अद्वय सुख रूप आत्मा है। उसके अनव बोधात्मक अज्ञान में सुख की आच्छादकता सन्निहित है। उसकी अत्यन्त उच्छित्ति अशेष पुरुषार्थ की सिद्धि है। अज्ञान की अनिवृत्ति अद्वय आनन्द आत्मा के सम्यग् ज्ञान की समुपलब्धि मात्र से सम्भव है। वास्तव बोध का सम्पादन प्रत्यक्ष अनुमान आदि वेदान्त आगम भिन्न प्रमाणों से असम्भव है। अतएव उपनिषदों में

सन्निहित तत्त्व मस्यादि महावाक्यों का परिशीलन कर्त्तव्य है। लक्षण में विरूपता तथापि एकरूपता विवर्तता का प्रयोजक है। यथा पुरुष स्थाणु की पुरुष लक्षण से विलक्षणता तथापि पुरुष रूपता पुरुष स्थाणु की विवर्तता का प्रयोजक है। तद्वत् नाम, रूप, कर्मात्मक दृश्य स्वरूप जगत् की और अनुगत अस्ति, भांति तथा प्रिय के योग से सत्ता, चित्ता तथा प्रियता अर्थात् अस्तित्व और उपयोगिता ; तथापि इसकी स्वत: सिद्ध अनित्यता, जड़ता और दु:ख प्रदता अचिद्वर्ग की विवर्तता का प्रयोजक है। प्रामाणिक निरीक्षण - परीक्षण करने पर दृश्य प्रपञ्च की अनित्यता, अचित्ता और दु:ख रूपता सिद्ध है। अतएव दृश्य मात्र की सावयवता तथा कार्य रूपता भी चरितार्थ है। कार्यात्मक प्रपञ्च को स्व अतिरिक्त निमित्त उपादान की अपेक्षा है। मन से भी अचिन्त्य अति विचित्र विश्व प्रपञ्च के निमित्त कारण का सर्वग, सर्व शक्तिमान् और सर्वज्ञ होना अनिवार्य है। निमित्त से भिन्न बहुभवन सामर्थ्य सम्पन्न उपादान को मानने पर वस्त्वन्तर के कारण उसे वस्तुकृत परिच्छेद सम्पन्न मानना अपरिहार्य है। वस्तुकृत परिच्छेद सम्पन्न की देश और कालकृत परिच्छिन्नता तथा कार्यरूपता भी सम्भाव्य है। अतएव अद्वितीयता असिद्ध है। जब कि वास्तव तत्त्व की अद्वयता श्रुत तथा अभिमत है। जो परब्रह्म सर्वात्मा है। विश्व का महान् आश्रय है। सूक्ष्म - से - सूक्ष्म और नित्य है, वह तुम ही हो, तुम ही वह हो ; सर्वाश्रय सर्वाधिष्ठान आत्मा की तत्त्व रूपता सुनिश्चित है। सबकी उत्पत्ति ईश्वर से ही हुई है, ईश्वर में ही सब प्रतिष्ठित है, ईश्वर में सब लयको प्राप्त होता है, अत: लक्षण साम्य से वस्तु साम्य के कारण वह अद्वय ब्रह्म ईश्वर ही है। तत्त्व वेत्ता उसे तत्त्व कहते हैं, जो आश्रय रूप ज्ञाता और विषय रूप ज्ञेय के भेद से रहित अद्वय ज्ञान है। वही ब्रह्म, परमात्मा और भगवान् कहा जाता है। ब्रह्मात्म तत्त्व त्वन्ता, अहन्ता तथा इदन्ता से विरहित अद्वितीय है। निर्भेद आत्मा में त्रिविधता आविद्यक है। ब्रह्मात्म तत्त्व के अतिरिक्त कुछ भी वास्तव नहीं है। अतएव सबकी ब्रह्मात्म रूपता के विज्ञान से ही श्रेय उपलब्धि सुनिश्चित है। आत्मा स्वत: सत्, स्वत: चित् तथा स्वत: आनन्द स्वरूप है। अतएव स्वत: सिद्ध है। जगत् की सत्ता, चित्ता तथा प्रियता का वही रस तथा रहस्य है।

सीबीएसई ने जारी किया 10वीं-12वीं का रिजल्ट: छत्तीसगढ़ में 12वीं में 79.69 प्रतिशत स्टूडेंट पास

रायपुर। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 10वीं और 12वीं का रिजल ?ट जारी कर दिया है। छत्तीसगढ़ से 12वीं में 30 हजार 795 बच्चे परीक्षा के लिए रजिस्टर्ड है। इसमें से 30 हजार 538 बच्चे एग्जाम में शामिल हुए। वहीं, 79.69 प्रतिशत बच्चे पास हुए। भुवनेश्वर रीजन में 12वीं का 83.34प्रतिशत और 10वीं का 92.03प्रतिशत गया है। सीबीएसई के स्टूडेंट्स ऑफिशियल वेबसाइट results.cbse.nicin या cbseresults.nic.in पर जाकर अपना रिजल्ट चेक कर सकते हैं।

10वीं में 93.60प्रतिशत स्टूडेंट्स पास हुए- देशभर में इस साल कक्षा 10वीं में 2,238,827 स्टूडेंट्स ने एग्जाम दिया था। इनमें से 2,095,467 छात्र पास हुए हैं। वहीं, 10वीं का पासिंग पर्सेंटेज 93.60 प्रतिशत रहा। इस तरह 0.48प्रतिशत बढ़ा है। 2023 में यह 92.12 प्रतिशत था। लड़कियों का पासिंग पर्सेंटेज 94.75प्रतिशत है, जबकि लड़कों का 92.71 प्रतिशत है।

12वीं में 87.98 प्रतिशत स्टूडेंट हुए पास- इस बार 12वीं में 87.98प्रतिशत स्टूडेंट पास हुए हैं। पिछले साल की तुलना में पासिंग पर्सेंटेज 0.65प्रतिशत बढ़ा है। लड़कों की तुलना में लड़कियों का पासिंग पर्सेंटेज 6.40प्रतिशत ज्यादा है। इस बार 91प्रतिशत से ज्यादा लड़कियां पास हुई हैं। सेंट्रल बोर्ड ऑफसेकेंडरी एजुकेशन ने 12वीं बोर्ड एग्जाम का रिजल्ट जारी कर दिया है। स्टूडेंट्स ऑफिशियल वेबसाइट results.cbse.nicin या cbseresults.nic.in पर जाकर अपना रिजल्ट चेक कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमारीज द्वारा 20 मई से संस्कारों की पाठशाला का आयोजन

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय वरदान भवन राजनांदगांव द्वारा 20 मई सोमवार से 26 मई रविवार तक संस्कारों की पाठशाला बच्चों की मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु शिविर का आयोजन किया जा रहा है । यह शिविर प्रतिदिन प्रात: 9:00बजे से 10:30 बजे तक आयोजित होगा । इस शिविर में कक्षा छठवीं से दसवीं तक के बच्चे भाग ले सकते है । इसमें विशेष रूप से बच्चो को आंतरिक व्यक्तित्व के विकास हेतु नैतिक मूल्यों की धारणा , मानव जीवन का लक्ष्य , जीवन में आदर्श व्यक्ति का महत्व , आदर्श दिनचर्या , मेडिटेशन जैसे विषयों के साथ साथ ज्ञानवर्धक खेल भी कराया जायेगा । कार्यक्रम के अंत में सबको प्रमाण पत्र भी दिया जायेगा । यह शहर के बच्चों के लिए एक सुंदर अवसर है अपने गर्मी के छुट्टी को सदुपयोग करने का । यह शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है लेकिन पंजीयन कराना आवश्यक है जिसके लिए लालबाग स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में आकर संपर्क किया जा सकता है । यह जानकारी स्थानीय सेवाकेंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन जी ने दी तथा शहर के बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की ।

नई सरकार बनते ही साय कैबिनेट में होंगे बड़े बदलाव

अमर, मूणत और अजय में से दो का मंत्री बनना तय, बदल सकते हैं तीन मंत्री

रायपुर। 4 जून के बाद केंद्र में नई सरकार बन जाएगी। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ की सत्ताधारी सरकार में भी बड़ा परिवर्तन होगा। एक मंत्री पद पहले से खाली है। बृजमोहन अग्रवाल अगर सांसद बने तो एक पद और खाली हो जाएगा। इस तरह दो खाली पदों के अलावा दो-तीन मंत्रियों के बदले जाने की बात भी सामने आ रही है। भाजपा सूत्रों की मानें तो लोकसभा चुनाव के परिणाम तय करेंगे कि मंत्री कौन होगा। इसकी शुरुआत लोकसभा चुनाव का बिगुल बजने के साथ ही हो गई थी। पहली बार भाजपा ने लोकसभा की 11 सीटों को तीन क्लस्टर में बांटा और इनकी जिम्मेदारी पूर्व मंत्रियों राजेश मूणत, अमर अग्रवाल और अजय चंद्राकर को दी गई। इनमें से दो को मंत्री बनाया जा सकता है।

मंत्रियों का रिपोर्ट कार्ड भी तैयार किया जा रहा

लोकसभा चुनाव के पहले ही मंत्रियों को जिले का प्रभार सौंप दिया गया था। इसके अलावा केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के निर्देश पर संगठनात्मक दृष्टि से हर मंत्री को एक-एक लोकसभा की जिम्मेदारी दी गई थी। अब शाह की टीम और संगठन दोनों अपने स्तर पर मंत्रियों का रिपोर्ट कार्ड बना रहे हैं। इसमें मंत्रियों के लोकसभा कामों के साथ, उनका कार्यकर्ताओं के प्रति व्यवहार, आर्थिक लेनदेन के आरोप, विकास कार्यों की भी समीक्षा की जाएगी। दिल्ली भाजपा कार्यालय से मिली जानकारी की मानें तो दो मंत्रियों का हटना तय है।

विधायकों की भी बन रही परफार्मेंस रिपोर्ट

भाजपा ने विधानसभा में 54 सीटें जीती हैं। ऐसे में हर विधायक को यह जिम्मेदारी दी गई थी कि जितने वोटों से वे जीते लोकसभा चुनाव में यह लीड बढ़नी ही चाहिए। आम चुनाव में जिस विधानसभा में लीड घटेगी, उस विधायक की परफार्मेंस रिपोर्ट रेड जोन में होगी। यानी उसको बड़ी जिम्मेदारी से दूर रखा जाएगा।

समाज सेवक संघ ने अंतर्राष्ट्रीय नर्सेस डे पर नर्सों का सम्मान किया

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। समाज सेवक संघ ने अंतर्राष्ट्रीय नर्सेस दिवस पर सांई कृपा अस्पताल में वहां की सभी 23 नर्सों का सम्मान किया एवं उन्हे सम्मान पत्र प्रदान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष इंजी. कु. स्वाति देवांगन थी। कु. स्वाति समाज सेविका हैं एवं शासकीय सेवा में सिविल इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। उन्होनें नर्सों को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। इंजी. कु. स्वाति ने अपने उद्बोधन में कहा कि नर्सों के बिना अस्पताल की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के संस्थापक अध्यक्ष एवं संयोजक समाज सेवी श्री संजीव सिंघल ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने नर्सिंग सेवा का प्रारंभ किया था एवं उनके जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय नर्सेस दिवस मनाया जाता है। सुश्री फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म इटली में हुआ था। श्री सिंघल ने नर्सों का सेवा, सामाजिक कल्याण एवं चिकित्सा के क्षेत्र में उनके अनमोल योगदान का उल्लेख किया। विशेष अतिथि संघ की नगर अध्यक्ष कु. रेवती साहू ने कहा कि नर्सों की मुस्कान एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार से रोगियों का आधा रोग दूर हो जाता है। इस अवसर पर हेड नर्स कु. सरोजनी पटेल ने कहा की नर्सेस धैर्य एवं शांति से सेवा कार्य करती हैं किन्तु उन्हें और अधिक स्नेह एवं विनम्रता से सेवा करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में नर्सेस अंशु रावटे, सरोजनी पटेल, उषा धगेश, प्रभा सेन, मोनिका, कान्ता साहू, नम्रता, दीपिका, चांदनी, चांदनी लहरे, प्रमिला उइके, भारती, वीणा, ललिता, तुलसी, गीतांजली, संध्या, नेहा, संजू, कविता, हेमलता पटेल, शिल्पी देवांगन एवं लोकिता को सम्मान पत्र दिया गया।

शबरी सेवा संस्थान द्वारा नशा मुक्ति एवं पुनर्वास के सौजन्य से लोगों में नशा मुक्ति हेतु अवेयरनेस प्रोग्राम कराया गया

रायपुर। छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान लखनपुर जिला सरगुजा छग के प्रदेश सचिव सुरेन्द्र साहू के मार्गदर्शन में दिनांक 12/05/2024 को रायपुर शहर के भाटागांव बी एस यू पी कॉलोनी में निजात कार्यक्रम के तहत छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान द्वारा संचालित अवतार नशा मुक्ति एवं पुनर्वास के सौजन्य से लोगों में नशा मुक्ति हेतु अवेयरनेस प्रोग्राम कराया गया जिसमें उपस्थित लोगों को नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बच्चे बूढ़े और जवानों में नशा से होने वाले दुष्परिणाम उसके प्रभाव व उससे बचाव से संबंधित सुझाव व अन्य विभिन्न तरीकों से नशा से होने वाली विभिन्न बिमारीओ को विस्तार से उपस्थित जन सामान्य को बताया गया । ईस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सी एस पी योगेश देवांगन , पुरानी बस्ती थाना प्रभारी योगेश कश्यप जी एवं समस्त पुलिस विभाग के कर्मचारीओ के साथ साथ में छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान द्वारा संचालित अवतार नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र के अध्यक्ष रश्मि दुबे , सचिव सूरज सिंह चौहान ,अंकित साहू, यूक्रांत दूधी एवम् समाज सेवी संस्था छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान की पूरी टीम के मार्गदर्शन में पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ। ईस दौरान नशा छोड़ने का संकल्प भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन रश्मि दुबे और आभार प्रदर्शन सुरज सिंह चौहान ने किया।

मोबाइल में आंखें गड़ाये रहने से रोगग्रस्त हो रहे हैं लोग, डॉ. मुकेश कुमार साहू का सनसनी खेज खुलासा

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। मरीजों को चॉकलेट बांटने के लिए प्रसिद्ध है डॉ. मुकेश कुमार साहू ने मोबाइल हैंडसेट को लेकर सनसनीखेज खुलासा किया है। उन्होंने बताया की आजकल बच्चों से लेकर बूढ़ों तक मोबाइल फोन में ही नजरे गड़ाये रहते हैं जिसका दुष्प्रभाव आंखों और मस्तिष्क पर पड़ रहा है। तेज सिर दर्द के साथ चक्कर आना आंखें कमजोर होना मोबाइल के अधिक से अधिक उपयोग की वजह से है। खाते समय सोते समय और अन्य काम करते समय मोबाइल में बहुत ज्यादा व्यस्त रहना मानव स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। किसी भी चीज की अधिकता सभी जगह वर्जित है कहां भी गया है अति सर्वत्र वर्जयेते डॉ. साहू ने कहा कि मोबाइल उतना बुरा नहीं है जितना हम उसको जरूरत से ज्यादा उपयोग करते हैं मोबाइल के चक्कर में और दूसरे जरूरी काम भुल रहे हैं यह अच्छी बात नहीं है अनावश्यक रूप से मोबाइल में उलझे रहना बहुतों की आदत बन गई है। लोग आपस में बैठकर सुख दुख की बातें किया करते थे वह भी अब कम ही होती है। डॉ मुकेश साहू ने विस्तार से अपनी बातें कहते हुए आगे बताया कि आज बच्चे से लेकर युवा वर्ग में मोबाईल का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ा हैं। आज के इस बिजी जिंदगी में समय काटने,बात चीत,इंटरटेनमेंट, खेलखुद, पढ़ाई लिखाई, मौज मस्ती, दुनियां भर की जानकारी हमें मोबाईल से बैठे बैठे मिल जाति हैं।मोबाइल के बिना आज के जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल हैं। इन्ही सभी कारणों से युवा वर्ग और बच्चे मोबाईल का अंधाधुंन प्रयोग कर रहा हैं। चैट, मूवी, वेब सीरीज, ऑनलाइन क्लास, फेसबुक, व्हाट्सप्प, स्नेपचैट, इंस्टाग्राम, नए नए विडवो बनाना और देखना, दिन रात उसी में लगे हैं। स्वास्थ्य विभाग जिला राजनांदगाव के सबसे युवा, तेज- तर्रार, सटीक सेवा देने में माहिर, डॉ. मुकेश कुमार साहू, नेत्र सहायक अधिकारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र -गैंदाटोला ने बताया की यह एकप्रकार का नशा हैं, जिससे निकलना बहुत जरुरी हैं। आज लोगों में सिर दर्द,चिरचिड़ा पन, घुस्सा, बेचैनी, अनिद्रा,टेंशन, मानसिक बिमारी,चक्कर आना, कमजोरी पन,आँख दर्द, कम दिखना, पढ़ने लिखने में दिक्कत आना, शाम को कम दिखाई देना, दूर और पास का नजर ख़राब होना, एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी हैं। रोज ऐसे अनेक मरीज आते हैं। इसका प्रमुख कारण मोबाईल, टी. वी., लैपटॉप, कम्प्यूटर का उपयोग आवश्यकता से ज्यादा करना हैं। आजकल माँ बाप अपने बच्चों को छोटी उम्र में ही मोबाईल दे देते हैं। 1-10 साल के बच्चे घंटो मोबाइल से खेलता रहता हैं। मेरे पास ऐसे अनेक पालक आते हैं, और समस्या बताते हैं की बच्चा बहुत गुस्सा करता हैं, चिरचिड़ाता हैं,सिर दर्द होता हैं, आँखों से आंसू आता हैं, बच्चे को ब्लैक बोर्ड का लिखा दिख नहीं रहा हैं। छोटी उम्र में बच्चों को चश्मा लग रहा हैं। डॉ. मुकेश साहू कहते हैं की मुझे समझ नहीं आता 1 से 10 साल के बच्चों को मोबाईल क्यों देना, उनका क्या लेना देना मोबाईल से ?आप अपने बच्चों को खुद बीमार कर रहे हो। इसके जिम्मेदार तो माँ बाप भी हैं।जो कितनी आसानी से अपने बच्चों के हाथो में एक नशा पकड़ा रहे हैं। कुल मिलाकर देखा जाये तो क्या बच्चे, क्या युवा और क्या बूढ़े सभी को ये समस्या हो रही हैं।देर रात जागना और मोबाईल चलाना सबसे ज्यादा ख़तरनाक हैं। क्योंकि लगातार एक जगह नजर टिकी रहती हैं। जिससे सबसे ज्यादा नजर ख़राब होता हैं। कोविड-19 के बाद ही पिछले 3-4 सालों में ही आँख की बिमारी और चश्मा नंबर के मरीज बढ़े हैं।इसका कारण कोविड-19 नहीं हैं।बल्कि लोग खाली पिली होने के कारण मोबाइल, टी. वी. लैपटॉप का उपयोग ज्यादा करने लग गए।समय काटने के लिए गेम खेलना, वेब सीरीज, फ़िल्म देखना ,ऑनलाइन क्लास लगने सुरु हो गए। सारा सिस्टम अब इसी में काम करने लग गए। अब हुआ ये की कोविड तो खतम हो गया, पर हम इन आदतों से निकल नहीं पाए।

एक समय था ज़ब हम कहते थे की चश्मा 40 के पार वालों को लगता हैं। आज लगभग आधी आबादी नेत्र रोग से पीड़ित हैं।निकट दृस्टिदोष के मरीजों की संख्या बड़ी हैं। जिसे हम मयोपिया कहते हैं। यह तेजी से बढ़ने वाला नंबर होता हैं। जिसे समय पर पहचान कर (-)नंबर का चश्मा दिया जाता हैं। जिसे दिन भर पहनना जरूरी होता हैं।

शासन और स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय समय पर लोगों को जागरूक करने के लिए नि: शुल्क नेत्र स्वास्थ शिविर, प्रचार प्रचार, चश्मा वितरण, स्कूल में जाकर बच्चों का परीक्षण और उपचार आदि किया जाता हैं।प्राथ. स्वा. केंद्र- गैंदाटोला के अंदर 34 गांव आते हैं, जिनका जनसंख्या लगभग 40000 हैं। अभी तक हमलोगों ने 37 नि: शुल्क शिविर का आयोजन किया हैं। जो इस साल 50 का लक्ष्य हैं।17 मिडिल स्कुल हैं, जिनके 1219 बच्चों का नेत्र जाँच तथा उपचार कर 35 बच्चों को नि: शुल्क चश्मा वितरण किया गया हैं। जिला प्रशासन, और स्वास्थ्य विभाग राजनांदगाव इस क्षेत्र में बहुत तेजी से कार्य कर रहे हैं।सही समय और सही उम्र में बच्चों तक पहुंचकर बिमारी को पहचान कर, उपचार और जिनको चश्मा की जरुरत हैं, उन्हें चश्मा देकर बिमारी को खत्म करने या उसे रोकने का प्रयास किया जा रहा हैं। मोबाईल का नशा शराब के नशे से भी ज्यादा ख़तरनाक हैं। धीरे धीरे ये मानवता के लिए खतरा बन रहा हैं। हमें समझना होगा की इलेक्ट्रॉनिक संसाधन या मशीनरी सामान हमारी सहायता के लिए हैं। इनका उचित उपयोग करना जरुरी हैं। आवश्यकता से ज्यादा प्रयोग और उपयोग दोनों ही ख़तरनाक हैं।

निषाद समाज के होनहार एवं प्रतिभावान बेटा को बधाई एवं शुभकामना

राजनांदगांव(नांदगांव टाइम्स)। जिला के अंतर्गत मूल रूप से ग्राम मासूल (बूचाटोला) तहसील छुरिया निवासी एवं वर्तमान निवास स्थान ग्राम माडीतराई डोंगरगढ़ के रहने वाले श्री निखिलेश निषाद एवं श्रीमती सरस्वती निषाद के होनहार एवं प्रतिभावान सुपुत्र मयंक निषाद ने कक्षा दसवीं की परीक्षा 92ल अंकों से उत्तीर्ण कर अपने अपने माता-पिता एवं समाज का नाम रोशन किये हैं। मयंक निषाद ने कक्षा आठवीं में 94ल अंक लेकर एवं कक्षा पांचवी में 95ल अंक प्राप्त कर मेरिट अंकों से सभी कक्षाएं उत्तरीण किये है। इनकी एक छोटी बहन भी है जो इस वर्ष कक्षा पांचवी 94ल अंक से उत्तरीण की है। इनके पिता ग्राम माडीतराई में पशु चिकित्सा विभाग में तृतीय श्रेणी कर्मचारी हैं तथा इनकी मां गृहणी के साथ-साथ कपड़ा सिलाई का भी कार्य करती हैं। मयंक निषाद कक्षा आठवीं की पढ़ाई ग्राम बेलगांव मिडिल स्कूल से किए हैं। तत्पश्चात अपने गांव से 13 किलोमीटर प्रतिदिन साइकिल चलाकर कक्षा नवमी की पढ़ाई डोंगरगढ़ सरस्वती शिशु मंदिर से किए हैं तथा कक्षा दसवीं की पढ़ाई सार्वजनिक बस से आना-जाना कर पूरी किए हैं। श्री मयंक निषाद 12वीं एवं इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी एवं केवट समाज के आराध्य देव श्री गुहा निषादराज जी उनकी इच्छा को अवश्य ही पूर्ण करेंगे।

अक्ति के बाद खेती की तैयारी प्रारंभ- चौधरी

राजनंदगांव(नांदगांव टाइम्स)। किसान नेता अशोक चौधरी ने कहा की अक्ति त्यौहार 10 मई को संपन्न हो गया है और किसानो को खेती की तैयारी प्रारंभ कर देना चाहिए ।खेत में बिखरे हुए खरपतवार एवं कांटो को चुनकर उसे नष्ट करना पहला काम है उसके बाद मेडो में जो खरपतवार एवं घास के नीचे छुपे हुए कीट पतंग को नष्ट करना चाहिए इससे फसल में लगने वाले कीट व्याधि कम हो जाता है जिनके खेतों में गर्मी की जुताई नहीं हुई है उन्हें 25 मई नौतपा के पहले जुताई कर लेना चाहिए फसल बोने वाले खेतों को नौतपा का धूप लगना जरूरी होता है।हमारे पूर्वज अकरस जुताई करते थे इससे खेत में छुपे हुए कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और वर्षा ऋतु का पहला पानी पडने से इसमें प्राकृतिक नाइट्रोजन घुल जाता है जिससे फसल को मुफ्त यूरिया का पहला डोज मिल जाता है। किसान भाई आज के समय मे सबसे ज्यादा जमीन के अंदर से पानी निकाल कर सिंचाई का काम हम करते हैं इसलिए जमीन के अंदर पानी का संचय करना भी हमारा ही काम है समस्त जीवों का पालन करने वाला किसान ही होता है किसने की जिम्मेदारी ग्राउंडवाटर की भी हो गई है एक एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में 400 500 करोड़ वृक्ष तैयार करना आवश्यक है नहीं तो ग्राउंडवाटर कुछ सालों में हो जाएगा।

शुभांक

2-3-6

234-9 369-8

भाग्यांक

130-4 570-2

जिला राजनांदगांव मे 4 दिवसीय सेन महोत्सव मनाया गया, ब्लाक सोमनी टेडेसरा इकाई में भव्य समापन

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। जिला सेन समाज राजनांदगाव के निर्देशानुसार नाई समाज के आराध्य गुरुदेव और अन्य सभी पंतो, वर्ग,समाज को भक्ति भजन का मार्ग दिखाने वाले, च्संत शिरोमणि सेन जी महाराजज् का 724 वी जयंती, 4 दिवसीय च्सेन-महोत्सवज् के रूप मे मनाया गया। जिसका भव्य समापन च्ब्लाक-सोमनी-टेड़ेसरा इकाईज्के ब्लाक अध्यक्ष श्री कौशल सेन जी के द्वारा ग्राम कोपेडीह मे भव्य आयोजन कर किया गया । जिला मीडिया संयोजक इन्द्रद्वीप हीरा सेन ने आगे बताया की जिलाध्यक्ष शेष नारायण सांडिल्य, जिला सचिव लोकेश सेन, जी के सयुंक्त निर्देशानुसार सेन जयंती का पहला कार्यक्रम दिनांक 5 मई, जिला सेन भवन, सहदेव नगर मे जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षिका श्री मती निशा श्रीवास के द्वारा पूजा अनुष्ठान करके मातृ शक्तियों और सामाजिक पदाधिकारिओं की उपस्थिति मे मनाया गया। दूसरे दिन दिनांक 6 मई, डोंगरगढ़ ब्लाक अध्यक्ष श्री गिरधारी सेन के नेतृत्व मे धर्मनगरी पर शाम को शोभायात्रा निकला गया और प्रस्तावित सेन भवन के भूमि स्थान पर सेन जी महाराज का पूजा अर्चना किया गया। फिर अतिथियों का स्वागत सम्मान कर रात्रि प्रीति भोज द्वारा सम्पन्न किया गया। इस कार्यक्रम में पदाधिकारीगण दीलिप सेन, संजू सेन, सुनील सेन, प्रदीप सेन, डोमार सेन प्रमुख रूप से उपस्थित थे। तीसरे दिन दिनांक 07 मई, जिले का मुख्य समारोह में जिला महामंत्री अनुप श्रीवास के नेतृत्व और जिला सेलून अध्यक्ष ईश्वर श्रीवास के अध्यक्षता में भव्य बाईक रैली संस्कारधानी शहर के मुख्य मार्गों मे निकाला गया जो रेवाडीह में समाप्त हुआ। तत्पश्चात ब्लाक अध्यक्ष अनिल कौशिक जी के द्वारा आयोजन स्थल श्री बूढ़ा देव मंदिर रेवाडीह में श्री रामायण महाकाव्य पाठ पूर्ण कर जिला से पधारे मुख्य अतिथियों का स्वागत और सम्मान किया गया। कार्यक्रम मे जिलाध्यक्ष श्री सांडिल्य जी, संयोजक देवशरण सेन सांसद प्रतिनिधि वरिष्ठ पदाधिकारी सालिक भारद्वाज महिला प्रकोष्ठ श्री निशा श्रीवास, न्याय प्रकोष्ठ विजय भारद्वाज का उद्बोधन प्राप्त हुआ। और दोपहर के प्रीति भोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार सोमनी-टेडेसरा इकाई अध्यक्ष कौशल सेन जी के नेतृत्व मे ग्राम कोपेडीह पर सेन जयंती मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में भव्य कलश यात्रा निकाला गया जो ग्राम के शिव मंदिर मे पूजा करके वापिस आयोजन स्थल पहुंचा। शोभायात्रा के बाद जिलाध्यक्ष, ब्लाक पदाधिकारियों द्वारा गणपति वंदना कर 36 कोटि देवी देवताओं का पूजा अनुष्ठान कर संत श्री सेन जी महाराज का तिलक वंदन और आरती किया गया। इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप मे वैशाली नगर विधायक महोदय श्री रिकेश सेन जी, विधायक प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण सेन जी, जिलाध्यक्ष श्री सांडिल्य जी, जिला सचिव लोकेश सेन जी, जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षिका श्रीमति निशा श्रीवास जी, जिला कार्यकारिणी से दयानंद सेन, युवा प्रकोष्ठ से शिव श्रीवास के साथ सभी ब्लाक पदाधिकारीगण प्रवीण कौशिक, अनील कौशिक, नोहर कौशिक, लक्ष्मी सेन, संजू सेन का स्वागत और सम्मान किया गया। कार्यक्रम मे विशेष रूप से आदरणीय विधायक जी का उद्बोधन द्वारा समाज को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के मध्य में राष्ट्रीय खिलाडी विकास श्रीवास जी का विधायक जी के द्वारा सम्मान किया गया। तत्पश्चात श्री रामायण महाकाव्य का पाठ किया गया और दोपहर के प्रीति भोज के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मंच संचालन में तारेश श्रीवास कार्यक्रम की व्यवस्था में उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सेन, सचिव नरेंद्र सेन, कोषाध्यक्ष रूपेन्द्र सेन, संगठन प्रभारी हेमंत कौशिक जी, सेलून संघ से श्री सच्चिदानंद जी, तामेश्वर श्रीवास जी का विशेष सहयोग रहा। यह जानकारी मीडिया प्रभारी प्रेम सेन ने दिया।

अंतर्राष्ट्रीय धुम्रपान निषेध दिवस 31 मई 2024 को विभिन्न नशामुक्ति कार्यक्रमों का आयोजन

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। अंतर्राष्ट्रीय धुम्रपान निषेध दिवस 31 मई 2024 को जन सामान्य में धुम्रपान और तम्बाकू सेवन करने की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण के लिए विभिन्न नशामुक्ति कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य ध्रुमपान से होने वाले दुष्परिणामों के प्रति समाज में जन चेतना विकसित करना है। उप संचालक समाज कल्याण ने बताया कि जिले में अंतर्राष्ट्रीय धुम्रपान निषेध दिवस पर नशामुक्ति के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे और लोगों को जागरूक किया जाएगा। नशामुक्ति कार्यक्रमों का आयोजन शहर से लेकर ग्राम स्तर तक किया जाएगा। कार्यक्रमों में तम्बाकू सेवन के दुष्प्रभाव पर चर्चा एवं उसके दुष्प्रभाव की जानकारी जनसमुदाय को दी जाएगी। साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से नशापान के दुष्प्रभावों की जानकारी, नशामुक्ति के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं, नशामुक्ति से संबंधित सांस्कृतिक कार्यक्रम, नशामुक्ति साहित्य का वितरण, नशामुक्ति प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा। इस संबंध में जिले के सभी नगरीय निकायों एवं जनपद पंचायतों के मुख्य नगर पालिक अधिकारियों एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारियों से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन के जरिए लोगों को जागरूक करने का आग्रह किया गया है।

समाज सेविका इंजी. कु. स्वाति देवांगन समाज सेवक संघ की राष्ट्रीय अध्यक्ष बनी

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। समाज सेवक संघ के संस्थापक अध्यक्ष एवं संयोजक समाज सेवी श्री संजीव सिंघल ने समाज सेविका इंजी. कु. स्वाति देवांगन को संघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया है। इंजी. कु. स्वाति देवांगन शासकीय सेवा में सिविल इंजीनियर है। उनकी नियुक्ति पर उन्हे संघ की प्रांताध्यक्ष श्रीमति नैमिन देशमुख, प्रियांशु सिंघल, दुर्ग संभाग की अध्यक्ष कु. दिव्या वर्मा, जिला राजनांदगांव के अध्यक्ष श्री भीमा साहू, बालोद जिले की अध्यक्ष कु. भुनेश्वरी साहू (रानी),सुरगी के अध्यक्ष तामेश्वर साहू, डोंगरगांव के अध्यक्ष रोहिणी पटेल, मोतीलाल रावटे, घोरदा के अध्यक्ष मनोज भट्टाचार्य, ककरेल के अध्यक्ष महेन्द्र बघेल, इंदामारा के अध्यक्ष कु. रूपा कंवर, कोटरासरार की अध्यक्ष ममता मैथिल, अमलीडीह के अध्यक्ष श्री गिरीश साहू, मुंदगांव की अध्यक्ष श्रीमति सरस्वती वर्मा,चवेली की अध्यक्ष यमला साहू, दिनेश पटेल, दौलत राम साहू, विजय निषाद, बबीता लहरे, आकाश यादव, अमित पटेल ने बधाई दी है।

आयुक्त ने लिया शहर के आंतरिक क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था का जायजा

सागर पारा एसएलआरएम सेन्टर में समय पर हाजरी नहीं भरने पर सेन्टर प्रभारी को नोटिस

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। निगम आयुक्त श्री अभिषेक गुप्ता अधिकारियो के साथ वार्डो में मूलभूत सुविधा सफाई पानी का प्रतिदिन निरीक्षण कर चल रहे निर्माण कार्यो का जायजा ले रहे है। इसी कडी में आज सुबह उनके द्वारा शहर के आंतरिक क्षेत्र वार्ड नं. 39 व 40 में साफ सफाई व्यवस्था देख एक ओर जहॉ सागर पारा एसएलआरएम सेन्टर में समय पर हाजरी नही भरने पर वही दूसरी ओर वार्ड नं. 39 में सफाई मे लापरवाही बरत हाजरी में अनियमितता पर नराजगी व्यक्त करते हुये संबंधितों को नोटिस जारी करने के निर्देश स्वास्थ्य अधिकारी श्री दीपक अग्रवाल को दिये। सबसे पहले आज आयुक्त श्री गुप्ता सागर पारा एसएलआरएम सेन्टर पहॅुच कचरा पृथककरण की जानकारी लिये, कचरे का ढेर देख प्रतिदिन पृथक पृथक करने सुखा कचरा का बंडल बनाने के निर्देश सेन्टर प्रभारी को दिये। उन्होने हाजरी रजिस्टर की जॉच किये, जॉच उपरांत समय पर हाजरी भरना नहीं पाया गया, न ही लाल पेन से अनुपस्थिति लगाना पाया गया, जिसपर नराजगी व्यक्त करते हुये सेन्टर प्रभारी को नोटिस जारी कर कार्यवाही करने के निर्देश स्वास्थ्य अधिकारी श्री अग्रवाल को दिये। आयुक्त श्री गुप्ता शहर के आंतरिक क्षेत्र सागर पारा, बासपाई पारा, चौखडिया पारा, हीरामोती लाईन, पठानपारा में साफ सफाई का निरीक्षण किये। उन्होंने सडक के साथ साथ गलियों में भी नियमित रूप से झाडू लगाकर कचरा उठाने के निर्देश दिये, इंदिरा नगर रोड नंदई चौक में कचरा डालने पर उसे प्रतिदिन उठाकर सफाई करने के निर्देश दिये। नंदई नाला में नालियों का पानी आने के कारण झिल्ली पन्नी, कचरा फसने पर चौखडिया पारा वैष्णव देवी मंदिर के पीछे नाला में जाली लगाने उप अभियंता श्री तिलक राज ध्रुव से कहा, जिससे झिल्ली पन्नी व कचरा रूक जाये और उसे असानी से निकाला जा सके। वार्ड नं. 39 में सफाई में लापरवाही देख हाजरी रजिस्टर की जॉच करने पर हाजरी में अनियमितता पायी गयी, जिसपर नराजगी व्यक्त करते हुये संबंधित सफाई ठेकेदार को नोटिस जारी कर कार्यवाही करने के निर्देश स्वास्थ्य अधिकारी को दिये। आयुक्त श्री गुप्ता द्वारा निर्माण कार्य निरीक्षण की कडी में गंज पारा स्कूल में आहता निर्माण कार्य का जायजा लेकर कार्य की स्वीकृति की जानकारी लिये, उन्होंने कहा कि निर्माण कार्य में तेजी लावे और विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये स्कूल खुलने के पूर्व कार्य पूर्ण करावे। उन्होंने दोनो वार्डो में स्वीकृत सीमेंट कांक्रिटिंग रोड व नाली निर्माण कार्य ठेकेदार द्वारा नही करने पर सम्पर्क कर कार्य जल्द कराने के निर्देश दिये।

राष्ट्रीय कैडेट के संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। 38वीं छत्तीसगढ़ बटालियन राष्ट्रीय कैडेट कोर इकाई राजनांदगांव के तत्वाधान में जेएलएम गायत्री विद्यापीठ राजनांदगांव में दस दिवसीय संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का समापन किया गया। कैम्प कमांडेट लेफ्टिनेंट कर्नल श्री विवेक कुमार के मार्गदर्शन में शिविर में राजनांदगांव, मानपुर-मोहला-चौकी एवं कवर्धा जिलों के 7 महाविद्यालय एवं 9 विद्यालय से कैडेटों ने शिविर के अंतिम दिन आयोजित विभिन्न खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छत्तीसगढ़ी एवं देश की संस्कृति की झलक अपनी प्रस्तुति के माध्यम से दिखाई। पीजी कॉलेज कवर्धा की छात्राओं ने देशभक्ति गीत में नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया एवं पहले पायदान पर रहीं। वहीं कमला देवी राठी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव की छात्राओं ने छत्तीसगढ़ी गीत बारहमासी द्वारा छत्तीसगढ़ की भुंईया को नमन किया एवं दूसरे पायदान पर रहीं। तीसरे स्थान पर पंडित शिवकुमार शास्त्री कृष्ण महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र सुरगी राजनांदगांव के छात्रों ने देशभक्ति गाने पर प्रस्तुति देकर खूब तालियां बटोरी। इसके साथ ही दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर पीजी कॉलेज डोंगरगांव, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र कवर्धा, स्वामी आत्मानंद स्कूल सुकुलदैहान, स्वामी आत्मानंद स्कूल डोंगरगढ़, सर्वेश्वरदास नगर पालिक निगम विद्यालय राजनांदगांव, स्वामी आत्मानंद स्कूल मोहला, होली किंगडम स्कूल कवर्धा सहित अन्य विद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। कैम्प कमांडेट लेफ्टिनेंट कर्नल श्री विवेक कुमार ने शिविर में शामिल सभी छात्र-छात्रओं को संबोधित किया और विजेता प्रतिभागियों को मेडल एवं कैम्प प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में पूर्व एनसीसी कैडेट पीजी कॉलेज कवर्धा के श्री अरूण कुमार मरकाम एवं दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव की विद्या साहू को आरडीसी परेड में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रमाण पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) खैरागढ जिला-खैरागढ-छुईखदान-गण्डई (छ.ग.)

ईश्तहार

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक यास्मिन पति मो. इब्राहिम मेमन निवासी वार्ड क्र. 7 खैरागढ तहसील खैरागढ जिला खैरागढ-छुईखदान-गण्डई के द्वारा ग्राम धनेली प.ह. नं. 30 तहसील खैरागढ स्थित अपने भूमिस्वामी हक की भूमि ख.नं. 19/3 रकबा 0.142 हे. भूमि में से 4796 वर्गफूट भूमि को व्यवसायिक प्रयोजन हेतु व्यपवर्तन कराने हेतु आवेदन पेश किया है। उक्त प्रकरण में आगामी सुनवाई दिनांक 27/05/2024 को नियत किया गया है।

अतः उपरोक्त संबंध में जिस किसी को दावा-आपत्ति पेश करना हो वह नियत दिनांक के पूर्व स्वयं/अपने अधिवक्ता/अपने द्वारा नियुक्त व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में दावा-आपत्ति पेश कर सकते हैं, नियत दिनांक के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं की जावेगी।

आज दिनांक 10/05/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी किया गया।

सील — **अनुविभागीय अधिकारी (रा.) खैरागढ**

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) खैरागढ जिला-खैरागढ-छुईखदान-गण्डई (छ.ग.)

ईश्तहार

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मो. इब्राहिम मेमन पिता इस्माईल अहमद निवासी वार्ड क्र. 7 खैरागढ तहसील खैरागढ जिला खैरागढ-छुईखदान-गण्डई के द्वारा ग्राम धनेली प.ह.नं. 30 तहसील खैरागढ स्थित अपने भूमिस्वामी हक की भूमि ख.नं. 19/6 रकबा 0.060हे. भूमि में से 4796 वर्गफूट भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु व्यपवर्तन कराने हेतु आवेदन पेश किया है। उक्त प्रकरण में आगामी सुनवाई दिनांक 27/05/2024 को नियत किया गया है।

अतः उपरोक्त संबंध में जिस किसी को दावा-आपत्ति पेश करना हो वह नियत दिनांक के पूर्व स्वयं/अपने अधिवक्ता/अपने द्वारा नियुक्त व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में दावा-आपत्ति पेश कर सकते हैं, नियत दिनांक के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई सुनवाई नहीं की जावेगी।

आज दिनांक 10/05/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालयीन पदमुद्रा से जारी किया गया।

सील — **अनुविभागीय अधिकारी (रा0) खैरागढ**

न्यायालय नजूल अधिकारी जिला खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई//

क्रमांक 7390/वा. नजूल / 2024

//उद्घोषणा//

रा.प्र.क्रमांक-202405291500001
शीर्ष अ-6 वर्ष 2023-24
खैरागढ़, दिनांक 13/05/2024

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदक/केतागण राजीव देवांगन एवं संजीव देवांगन दोनों पिता नेमीचंद देवांगन निवासी दाऊचौरा खैरागढ़ तहसील खैरागढ़ जिला खैरागढ़-छुईखदान-गंडई द्वारा नगर खैरागढ़ मोहल्ला वार्ड क्रमांक-07 गोलबाजार ब्लाक नं. 06 स्थित भूखण्ड कमांक 455/54 कुल रकबा 160 वर्गफूट जो आवेदक द्वारा पंजीकृत विकयपत्र दिनांक 13.03.2024 के माध्यम से अनावेदक/विक्रेता चंद्रकांत विदान एवं चंद्रशेखर विदानी दोनों पिता उदय गोपाल विदान निवासी वार्ड क्रमांक-17 शिव मंदिर रोड खैरागढ़ जिला खैरागढ़-छुईखदान-गंडई से कय उपरांत उक्त वाद भूमि संबंधी रिकार्ड अपना नाम दर्ज किए जाने नामांतरण आवेदन इस न्यायालय में प्रस्तुत किया है।

अतएव उपरोक्तानुसार वाद भूमि संबंधी रिकार्ड पर आवेदक के नाम किए पर नामांतरण किये जाने में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो अपना आपत्ति / आक्षेप ईश्तहार प्रकाशन तिथि के 15 दिनों के भीतर स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित अवधि के पश्चात प्राप्त होने वाले आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 12-0.5-2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय पदमुद्रा से जारी किया गया।

सील — **न्यायालय नजूल अधिकारी खैरागढ़-छुईखदान-गंडई**

nandgaon times may-14-2.qxd 5/13/2024 11:58 PM Page 3

ज्ञान मंथन

1) वर्ष 2024 में गणतंत्र दिवस पर, केंद्र सरकार कितने लोगों को जीवन रक्षा पदकों से सम्मानित करेगी?
2) एशियाई विकास बैंक के कार्यकारी निदेशक के रूप में हाल ही में किसे नियुक्त किया गया है?
3) समाचार एजेंसी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया लि. (पीटीआई) ने अपनी सेवाएं कब आरम्भ की थी?
4) पर्यावरण का जैविक कारक क्या है?
5) किस रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के पूर्व महानिदेशक का हाल ही में अमेरिका में निधन हो गया वह रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के पहले भारतीय फेलो थे?

RamaQuiz (Pappu Ganesh)

उत्तर माला

(1) 31 (2) विकाश शील (3) 1 फरवरी 1949 (4) वनस्पति (5) डॉ. वी एस अरूणाचलम

युगान्तर का सीबीएसई 12वीं बोर्ड में उत्कृष्ट परिणाम

राजनांदगाँव (नांदगांव टाइम्स)। प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था युगान्तर पब्लिक स्कूल में सीबीएसई बारहवीं बोर्ड की परीक्षाफल आज सीबीएसई द्वारा घोषित कर दिए गए हैं, जो कि उत्कृष्ट रहे हैं। घोषित नतीजों में युगान्तर के कुल 24 विद्यार्थियों ने 85प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करके विद्यालय और नगर का नाम गौरवान्वित किया है, जिसमें रिद्धिमा अग्रवाल 95.8 प्रतिशत, ईशान गुप्ता 94.6प्रतिशत, ओमप्रकाश मोटलानी 94.2प्रतिशत, हुसैन जामिल 94प्रतिशत, स्वपनिल टल्लु 93.2प्रतिशत, अक्षत कोचर 92.4प्रतिशत, खुशी बया 92.2प्रतिशत, पुष्कर अग्रवाल 91.4प्रतिशत, अनुष्का जैन 91प्रतिशत, राशी राय,90.4प्रतिशत, निशिता अग्रवाल 90प्रतिशत, तेजराज सिंह भाटिया, 90प्रतिशत, रिया शुक्ला 89.6प्रतिशत, ऐश्वर्या रमेश 89.4प्रतिशत, आस्था खंडेलवाल 89.2प्रतिशत, लक्ष बत्रा 89प्रतिशत, नोमन कोशले 88.4प्रतिशत, अराध्य गुप्ता 87.6प्रतिशत, नमन सिंह 87.6प्रतिशत, लुपासा नगपुरे 87.2प्रतिशत, गुरमन सिंह भाटिया 86.2प्रतिशत, तनीषा जैन 86.2प्रतिशत, अभय बैद 86प्रतिशत, दीक्षा साहू 86प्रतिशत प्रमुख हैं। विद्यालय का परीक्षाफल इस प्रकार रहा- 90प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थी 13 रहे, 85प्रतिशत से 89प्रतिशत अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थी 11 रहे , 80प्रतिशत से 84प्रतिशत अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थी 17 रहे, जबकि 60प्रतिशत से 79प्रतिशत अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थी 51 रहे। 9 विद्यार्थी कामर्स में तथा 3 विद्यार्थी साइंस में 90 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करके विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। रिद्धिमा अग्रवाल ने 95.8 प्रतिशत लाकर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। शाला का उत्कृष्ट रिजल्ट सुनकर शाला में खुशी की लहर दौड़ गई । विद्यालय के प्राचार्य डॉ. मधु पी चौधरी ने समस्त छात्र छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि लक्ष्य पर फोकस करने से ही विद्यार्थी मनवांछित सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन विनोद सदानी, सेक्रेटरी विनय डड्ढा, कोषाध्यक्ष मिश्रीलाल गोलछा, निदेशक (अकेडमिक्स) सुशील कोठारी सहित युगांतर परिवार ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी है।

12वीं के टॉपर ओगेश साहू का कायस्था कम्युनिटी ने किया सम्मान

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। 12वीं की वार्षिक परीक्षा में प्रवीण सूची में स्थान बनाए ओगेश साहू पिता नरेंद्र साहू निवासी भाटागांव का कायस्था कम्युनिटी द्वारा सम्मान किया गया।

कम्युनिटी के रमेश श्रीवास्तव, राजू श्रीवास्तव, मधुबाला श्रीवास्तव, प्रतिमा श्रीवास्तव, दिवाकर श्रीवास्तव और अभिषेक श्रीवास्तव ने उन्हें संयुक्त रूप से भगवान चित्रगुप्त की तस्वीर एवं कलम प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर समस्त कायस्थजनों ने श्री साहू का मुंह मीठा कराकर उज्जवल भविष्य की कामना की। इस सम्मान समारोह के दौरान मेधावी विद्यार्थी श्री साहू के साथ उनके परिजन भी उपस्थित थे।

कक्षा 10वीं- 12वी का प्रतिशत शत्-प्रतिशत

नीरज विद्या मंदिर के बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम उत्कृष्ट रहा

दसवीं में अवनी पाण्डेय एवं बारहवी में पुष्पेन्द्र साहू प्रथम रहे

डोंगरगांव (नांदगांव टाइम्स)। नगर की एक मात्र सीबीएसई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था नीरज विद्या मंदिर (मोहड़) में 10वीं एवं 12वीं का वार्षिक परीक्षा परिणाम बोर्ड उत्कृष्ट रहा। जिसमें 10वीं में कुल 43 विद्यार्थियों में से 24 विद्यार्थियों ने एवं 12वीं में कुल 35 विद्यार्थियों में से 20 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण अंक प्राप्त कर संस्था एवं नगर को गौरवांवित किया है। 10वीं में अवनी पाण्डेय ने 91, कृष्णा खण्डेलवाल ने 88 एवं उपासना निर्मलकर ने 86 प्रतिशत अंक के साथ क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान अर्जित कर पूरे वनांचल संस्था तथा अपने अभिभावकों का नाम रौशन किया। इसी प्रकार इन्होंने अपने-अपने विषय में 90 से अधिक अंक अर्जित किया है। इसी प्रकार 12वीं में वाणिज्य संकाय (कॉमर्स) से पुष्पेन्द्र साहू ने 90 प्रतिशत अंक

अर्जित कर अपने संकाय में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने संस्था एवं अभिभावक का नाम गौरवांवित किया है। वहीं विज्ञान संकाय (बायो) से अपूर्वा तितिक्षा ने 85.2 प्रतिशत अंक अर्जित कर अपने संकाय में प्रथम रही। वहीं विज्ञान संकाय (बायो) से विजयश्री साहू ने 81 प्रतिशत अंक अर्जित कर अपने संकाय में द्वितीय स्थान पर रही। इस प्रकार शिक्षा सत्र. 2023-24 सेंकेण्डरी एवं हाय सेकेण्डरी वार्षिक परीक्षा का परिणाम शानदार एवं उत्कृष्ट रहा। संस्था के होनहार बच्चे पूर्व से ही टॉपर रहे है। इन्होंने विगत हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा में भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर संस्था का नाम गौरवांवित किया था। इस सराहनीय कार्य और उपलब्धि के लिए संस्था के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स श्री नीरज बाजपेयी, श्रीमती सोनल बाजपेयी, इंजी. दिलीप तिवारी, श्री रितेश शर्मा, श्री नीरज कोटडिया, श्री समीर पोद्दार, सुश्री कुंतल बाजपेयी, एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर श्रीमती पुष्पा वाजपेयी, एकेडमिक डायरेक्टर श्रीमती उर्मिला दीक्षित, प्राचार्या सुश्री अंजुम जहान एवं प्रशासक श्री जी राम सिन्हा संस्था के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। यह जानकारी एक विज्ञप्ति में व्याख्याता डॉ. लोकेश शर्मा ने दी।

गोड़लवाही में कक्षा 12वी का 96 प्रतिशत एवं 10वी का 88.67 प्रतिशत रहा परीक्षाफल

डोंगरगांव (नांदगांव टाइम्स)। शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल गोड़लवाही में बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम बेहतर रहे। कक्षा12वीं का परीक्षा परिणाम 96.6प्रतिशत एवं 10वीं 88प्रतिशत प्रतिशत रहा।

प्राचार्य का शैलेष कुमार पिस्दा एवं व्याख्याता कमलेश साहू ने बताया कि कक्षा 12वी में 59 परीक्षार्थी सम्मिलत हुए थे जिसमें 57 छात्रों को उत्तीर्ण घोषित किया गया। 20 प्रथम श्रेणी, 37 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण रहे। प्रथम उमेश कुमार 81 प्रतिशत द्वितीय लूतन 74 प्रतिशत रही। कक्षा10 वी गणित, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय का परिणाम शत प्रतिशत रहा। कक्षा दसवी में 87 छात्र सम्मिलत हुए थे । 77 छात्र सफल रहे। भावना ने दसवी बोर्ड में 88.67 प्रतिशत प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही। द्वितीय पुष्पेन्द्र देवांगन 87प्रतिशत प्राप्त किया। शाला के बेहतर परिणाम के लिए व्याख्याता डी. के गोयल, एल एन निर्मलकर , हीरालाल साहू, पालेन्द्र कुल्हारा, सुरभि श्रीवास्तव, नरेंद्र तारम ,देवेन्द्र रावटे ने शुभकामनाएँ दी।

नीरज माईलस्टोन स्कूल का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा, केण्रितुश्री 93.6 प्रतिशत के साथ जिले में प्रथम

के. रितुश्री (93.6 प्रतिशत)

अलफिया मेमन (82.4 प्रतिशत)

खैरागढ़ (नांदगांव टाइम्स)। नीरज माईस्टोन स्कूल.खैरागढ़ का सीबीएसई में कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा। सीबीएसई द्वारा घोषित सत्र 2023.24 में कक्षा दसवीं का परिणाम शत प्रतिशत के साथ फिर से नीरज माईलस्टोन ने अपने वर्चस्व को कायम रखा। विद्यालय के 10वीं की छात्रा केण्रितुश्री पिता श्री केण्श्रीनिवाश ने 93.6 प्रतिशत अंक ;गणित 97ए अंग्रेजी 95ए विज्ञान 93ए सामाण्विज्ञान 92ए हिन्दी 91द्ध पाकर खैरगढ़ जिले में प्रथम स्थान प्राप्त कर परिवार के साथ ही साथ विद्यालय का मान बढ़ाया हैए इसके साथ ही कई छात्रध्छात्राएं 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये है। दूसरे स्थान पर अलफिया मेनम ;82ण्4 प्रतिशतद्धए तीसरे स्थान पर अनवेशा चोपड़ा ;81ण्6 प्रतिशतद्धए चैथे स्थान पर नमन वाण् लिलहारे ;80ण्4 प्रतिशतद्ध एवं पांचवे स्थान पर अविका बैस ने ;80 प्रतिशतद्ध अंक प्राप्त किया। संस्था के डायरेक्टर श्री नीरज बाजपेयीए श्रीमती सोनल बाजपेयी ने छात्रों और उनके परिवार को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षकों एवं पालकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने कठिन परिश्रम और अनुशासन से यह सफलता प्राप्त की है। एकेडेमिक डायरेक्टर श्रीमती उर्मिला दीक्षितए प्राचार्य श्री अभिजीत मुखर्जीए एडमिन श्री योगेश डेगोर एवं सभी शिक्षकों ने बच्चों को इस सफलता के लिए बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

10वीं एवं 12वीं सीबीएसई बोर्ड में गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम बेहतर

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। सीबीएसई बोर्ड द्वारा शुक्रवार को घोषित कक्षा 12वीं के परीक्षा परिणाम में विद्यार्थियों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से जिले का गौरव बढ़ाया। जिले की प्रतिष्ठित शाला गायत्री विद्यापीठ में अध्ययनरत् विद्यार्थियों ने सत्र 2023-24 में शानदार उपलब्धि हासिल की है। शाला में बायोलॉजी सेक्शन से अभय शर्मा 91.80 प्रतिशत अंक हासिल कर प्रथम, सृष्टि सिन्हा 88.20

प्रतिशत अंक हासिल कर द्वितीय एवं युक्ति पटेल 87.60 प्रतिशत अंक हासिल कर तृतीय स्थान पर रही। कॉमर्स सेक्शन में ईशा जैन 89.20 प्रतिशत अंक हासिल कर प्रथम, कनिका टाँक 87.20 प्रतिशत अंक हासिल कर द्वितीय एवं एकता जैन कांकरिया 82.40 प्रतिशत अंक हासिल कर तृतीय स्थान पर रही। गणित संकाय से जय बजाज ने 87.60 प्रतिशत अंक हासिल कर प्रथम स्थान पर रहे। इसी प्रकार मयंक कुमार मोहनमाला 85 प्रतिशत अंक लेकर द्वितीय, उज्जवल अग्रवाल एवं राहुल वर्मा 83.80 प्रतिशत अंक हासिल कर तृतीय स्थान पर रहे। इसी प्रकार 10वीं बोर्ड की परीक्षा में कुल 115 विद्यार्थी शामिल हुए। परीक्षा शत-प्रतिशत रहा। शाला में मानव शर्मा 94.60 प्रतिशत अंक हासिल कर प्रथम स्थान पर रहे। भूमिका साहू 92.80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय एवं अदिति सिन्हा 92.20 प्रतिशत अंक हासिल कर तृतीय स्थान पर रही। वहीं भूमि किरण अग्रवाल, जय सोलंकी, अनमोल गुप्ता एवं भूमिका हिरवानी ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किये। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि पर विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती शैलजा नायर ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यार्थियों ने विद्यालय एवं अपने माता-पिता का मान बढ़ाया है। मैं सभी को पुन: हृदय से शुभकामनाएं देती हूँ। इस अवसर पर गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री बृजकिशोर सुरजन, उपाध्यक्ष श्रीमती संध्यादेवी सिंघल, श्री राजेश जैन, सचिव श्री गगन लड्ढा, सहसचिव निकुंज सिंघल, कोषाध्यक्ष सूर्यकान्त चितलांग्या, संरक्षक श्री नंदकिशोर सुरजन, श्रीमती सुषमा सुरजन, सांस्कृतिक प्रभारी श्री हरीश गांधी, श्रीमती रूपाली गांधी, एकेडमिक प्रभारी श्री अमित उत्तलवार, प्राचार्य श्रीमती शैलजा नायर, उप प्राचार्य श्रीमती रश्मि ठाकुर, प्रशासक अनिल वाजपेयी एवं समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं ने छात्रों को शुभकामनाएं देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

गोड़लवाही में कक्षा 12वी का 96प्रतिशत एवं 10वी का 88.67 प्रतिशत रहा परीक्षाफल

डोंगरगांव (नांदगांव टाइम्स)। शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल गोड़लवाही में बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम बेहतर रहे। कक्षा12वीं का परीक्षा परिणाम 96.6प्रतिशत एवं 10वीं 88प्रतिशत प्रतिशत रहा।

प्राचार्य का शैलेष कुमार पिस्दा एवं व्याख्याता कमलेश साहू ने बताया कि कक्षा 12वी में 59 परीक्षार्थी सम्मिलत हुए थे जिसमें 57 छात्रों को उत्तीर्ण घोषित किया गया। 20 प्रथम श्रेणी, 37 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण रहे। प्रथम उमेश कुमार 81 प्रतिशत द्वितीय लूतन 74 प्रतिशत रही। कक्षा10 वी गणित, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय का परिणाम शत प्रतिशत रहा। कक्षा दसवी में 87 छात्र सम्मिलत हुए थे । 77 छात्र सफल रहे। भावना ने दसवी बोर्ड में 88.67 प्रतिशत प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही। द्वितीय पुष्पेन्द्र देवांगन 87प्रतिशत प्राप्त किया। शाला के बेहतर परिणाम के लिए व्याख्याता डी. के गोयल, एल एन निर्मलकर , हीरालाल साहू, पालेन्द्र कुल्हारा, सुरभि श्रीवास्तव, नरेंद्र तारम ,देवेन्द्र रावटे ने शुभकामनाएँ दी।

धर्म समाचार....

मां गंगा की पूजा करते समय पढ़ें यह व्रत कथा, मिट जाएंगे सारे पाप

धार्मिक मान्यता है कि गंगा नदी में केवल स्नान करने से व्यक्ति द्वारा किए सभी पाप कट जाते हैं। साथ ही आरोग्यता का वरदान प्राप्त होता है। अत: साधक न केवल गंगा सप्तमी पर बल्कि सामान्य दिनों में भी गंगा स्नान करते हैं। वहीं गंगा सप्तमी और गंगा दशहरा के उपलक्ष्य पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु गंगा नदी में आस्था की डुबकी लगाते हैं। हर वर्ष वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को गंगा सप्तमी मनाई जाती है। इस वर्ष 14 मई को गंगा सप्तमी है। सनातन शास्त्रों में मां गंगा की महिमा का वर्णन मिलता है। धार्मिक मान्यता है कि गंगा नदी में केवल स्नान करने से व्यक्ति द्वारा किए सभी पाप कट जाते हैं। साथ ही आरोग्यता का वरदान प्राप्त होता है। अत: साधक न केवल गंगा सप्तमी पर बल्कि सामान्य दिनों में भी गंगा स्नान करते हैं। वहीं, गंगा सप्तमी और गंगा दशहरा के उपलक्ष्य पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु गंगा नदी में आस्था की डुबकी लगाते हैं। अगर आप भी मां गंगा की कृपा के भागी बनना चाहते हैं, तो गंगा सप्तमी पर स्नान-ध्यान के बाद विधि-विधान से मां गंगा की पूजा करें। साथ ही पूजा के समय यह व्रत कथा जरूर पढ़ें।

व्रत कथा- सनातन शास्त्रों में मां गंगा की उत्पत्ति का वर्णन है। त्रेता युग में इक्ष्वाकु वंश के राजा सगर अयोध्या में राज करते थे। उन्होंने अपने राज्य का व्यापक विस्तार किया। हालांकि, उनके मन में सम्राट बनने की गहन इच्छा थी। इसके लिए उन्होंने पंडितों से सलाह लेकर अश्वमेघ यज्ञ करने की ठानी और उन्होंने पुत्रों को घोड़े के साथ पृथ्वी भ्रमण की आज्ञा दी। राजा सगर के पुत्र जब पृथ्वी भ्रमण कर रहे थे। तभी अश्वमेघ घोड़ा खो गया। यह जानकारी उन्होंने अपने पिता को दी। राजा सगर ने किसी भी कीमत पर अश्वमेघ घोड़ा लाने की सलाह दी। इसके बाद राजा सगर के पुत्र घोड़े को ढूंढते-ढूंढ़ते कपिला ऋषि के आश्रम जा पहुंचे। उस स्थान पर घोड़े को बंधा देख उन्हें विश्वास हो गया कि घोड़े की चोरी कपिला ऋषि ने ही की है। राजा सगर के पुत्रों ने कपिला ऋषि को ललकारा और अपमानित भी किया। उस समय कपिला ऋषि क्रोधित हो उठे और तत्क्षण राजा सगर के पुत्रों को भस्म कर दिया। यह जानकारी राजा सगर को हुई। उस समय राजा सगर ने अम्सुमन को यह कार्य सौंपा। अम्सुमन अश्वमेघ घोड़ा लाने में सफल हुआ। साथ ही पितरों को मोक्ष दिलाने हेतु उपाय भी जाना। उस समय कपिला ऋषि ने कहा-मां गंगा ही उनके पितरों का उद्धार कर सकती हैं। हालांकि, राजा सगर ने अपने पुत्रों को मोक्ष दिलाने के बजाय अश्वमेघ यज्ञ किया। इसके बाद अम्सुमन को सत्ता सौंप राजा सगर तपस्या हेतु वन चले गए। कालांतर में अम्सुमन समेत उनके पूर्वजों ने पितरों को उद्धार दिलाने हेतु मां गंगा की कठिन तपस्या की। इनमें किसी को सफलता नहीं मिली। कालांतर में राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ ने राज त्याग कर हिमालय पर मां गंगा की तपस्या की। भगीरथ को इस कार्य में सफलता मिली। अंतत: मां गंगा धरती पर अवतरित हुईं।

क्यों भगवान शंकर की जटाओं में समाई थीं देवी गंगा? जानिए इसके पीछे की पौराणिक कथा

देवी गंगा भगवान शिव की जटाओं में विराजमान हैं। उन्हें भोलेनाथ ने अपनी जटा में स्थान क्यों दिया इस कथा को आज हम विस्तार से जानेंगे। इसके साथ ही इस बात को भी जानेंगे कि शिव जी को गंगाधर नाम किस वजह से दिया गया? तो आइए इस पौराणिक कथा को जानते हैं - धर्म डेस्क, नई दिल्ली। भगवान शिव की पूजा का शास्त्रों में विशेष महत्व है। ऐसी मान्यता है कि वे अपने भक्तों से तुरंत प्रसन्न हो जाते हैं और उनके सभी दुखों को दूर करते हैं। भोलेनाथ को गंगाधर नाम से भी जाना जाता है, लेकिन उन्हें यह नाम क्यों मिला ? इसके पीछे की वजह हर कोई नहीं जानता, तो आइए जानते हैं भगवान शंकर को यह दिव्य नाम कैसे प्राप्त हुआ? पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी गंगा पहले स्वर्गलोक में वास करती थीं,

लेकिन भागीरथ ने अपने पूर्वजों को मोक्ष दिलाने के लिए देवी की घोर तपस्या की और उनसे पृथ्वी पर अवतरित होने के लिए प्रार्थना की। भागीरथ की तपस्या से खुश होकर मां गंगा पृथ्वी लोक पर आने के लिए तैयार हो गईं, लेकिन उनकी धारा का प्रवाह इतना तेज था, जिसे शायद धरती और उस पर रहने वाले लोग सहन नहीं कर पाते। इसके बाद भागीरथ ने तपस्या कर भोलेनाथ को प्रसन्न किया। इस समस्या से पृथ्वी को बचाने के लिए शिव जी ने अपनी जटाओं को खोल दिया और इस तरह देवी गंगा देवलोक से उतरकर भगवान शिव की जटा में समाईं। भोलेनाथ की जटाओं में आते ही देवी का वेग कम हो गया और फिर मां गंगा धरती पर प्रकट हुईं। बता दें, देवी गंगा को अपनी जटाओं में धारण करने की वजह से शिव जी को गंगाधर नाम मिला।

nandgaon times may-14-2.qxd 5/13/2024 11:59 PM Page 4

- क्रिकेट किट
- फुटबाल
- हॉकी किट
- योगा मेट

स्वाती स्पोर्ट्स

खिलाड़ियों एवं विद्यार्थियों के लिए विशेष छूट...

क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी, वॉलीबॉल, खो- खो, बैडमिंटन, बास्केट बॉल, थ्रो बॉल, शॉफ्ट बॉल, हाई जम्प, बॉक्सिंग रिंग, टेनिस बॉल, स्पोर्ट्स बॉल, रैकेट बेग, स्पोर्ट्स बॉटल, स्पोर्ट्स बेग, बैडमिंटन नेट, स्कोरल टेबल, बोर्ड गेम्स, टी- टी टेबल,टी-टी बॉल, टेबल टेनिस बेट, टी-टी बेट, टेक शूट, जिम सामग्री, स्पोर्ट्स शूज, स्कूल बेग सहित सभी खेल सामग्री उपलब्ध...

स्टेडियम परिसर, कलेक्टोरेट के सामने राजनांदगांव, मो. 99819-65770, 88393-71971

मनुष्य के चरित्र निर्माण में होती है शिक्षक की मुख्य भूमिका

शिक्षक कला प्रतिभा अकादमी की शपथग्रहण एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

छुरिया (नांदगांव टाइम्स)। गत 11मई को राजधानी रायपुर के सिविल लाइन में स्थित वृंदावन भवन के सभा हॉल में नवनिर्वाचित शिक्षक कला प्रतिभा अकादमी छत्तीसगढ़ की शपथग्रहण एवं सम्मान समारोह छत्तीसगढ़ के प्रख्यात साहित्यकार व जनकवि मीर अली मीर के मुख्यआतिथ्य एवं आरपीएफ निरीक्षक व सुप्रसिद्ध पंडवानी गायिका करूणा साहू के अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

विशेष अतिथि मंच संचालन समिति के प्रांतीय संयोजक चन्द्रशेखर परघनिहा, समाज सेवी तारेन्द्र चन्द्राकर एवं संस्था के संरक्षक परसराम साहू थे। कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा अर्चना के साथ हुआ पश्चात अतिथियों एवं समस्त प्रांतीय पदाधिकारियों का पुष्पगुच्छ एवं बैच लगाकर स्वागत किया गया। संस्था के प्रांतीय मीडिया प्रभारी दिनेश कुरेटी दिलेर द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार वक्ताओं ने कहा कि शिक्षकों से मिली शिक्षा से ही लोगों को समाज सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की मुख्य भूमिका होती है।अच्छी शिक्षा से कला व संस्कृति की रक्षा होती है।मनुष्य के चरित्र निर्माण में शिक्षक की प्रमुख भूमिका होती है।जिस तरह भवन की सुन्दरता उनके मजबूत नींव पर निर्भर होती है उसी तरह इंसान की अच्छे कार्य उनके शिक्षा पर निर्भर होती है। शिक्षक श्रृजन कर्ता होते है इसलिए मनुष्य के उन्नति एवं अवनति उनको मिले शिक्षा पर निर्भर करती है।शिक्षक को सिर्फवेतनभोगी नहीं बल्कि समाज के लिए कल्याणकारी कार्य करने वाला होना चाहिए। शिक्षक की एक छोटी सी भूल समाज को गलत दिशा में ले जा सकता है इसलिए शिक्षक को एक अच्छा पथ प्रदर्शक तथा सोच समझकर निर्णय लेने वाला होना चाहिए। बहुमुखी प्रतिभा के धनी शिक्षक समाज के लिए पारस पत्थर के समान होते है।

मीर अली मीर ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'नंदा जाही का रे नंदा जाही का ' की प्रभावशाली प्रस्तुति कर शिक्षक -शिक्षिकाओं को गौरवशाली प्राचीन भारतीय परम्परा एवं संस्कृति को संरक्षित करने प्रेरित किया। करूणा साहू ने सुमधुर आवाज में पंडवानी प्रस्तुत कर उपस्थित शिक्षक -शिक्षिकाओं एवं बच्चों को ग्राम्य कला संस्कृति को बचाने का संदेश दिया। सभा को समस्त अतिथियों एवं संस्था के प्रमुख प्रांतीय पदाधिकारियों ने संबोधित कर शिक्षक कला प्रतिभा अकादमी छत्तीसगढ़ के उद्देश्य के अनुरूप बच्चों एवं शिक्षकों के सर्वांगीण विकास हेतु कार्य करने का आव्हान किया। स्वागत भाषण संस्था के प्रांतीय अध्यक्ष मीना भारतद्वाज,संचालन मोहित शर्मा एवं संजय मैथिल,आभार प्रदर्शन विरेन्द्र कुमार साहू एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम स्कूली छात्रा ने प्रस्तुत किया। संस्था की ओर से स्मृति चिन्ह एवं शाल भेंट कर अतिथियों को सम्मानित किया गया। उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने संस्था के उद्देश्य एवं पदीय दायित्वों के अनुरूप कार्य करने का शपथ लिया। उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए शिक्षक कला प्रतिभा अकादमी छत्तीसगढ़ के पदाधिकारियों एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के उत्कृष्ट शिक्षक-शिक्षिकाओं को अतिथियों के करकमलों से स्मृति चिन्ह,प्रशस्ति पत्र, शाल एवं वार्षिक कैलेण्डर प्रदान कर सम्मानित किया गया। जिनमें प्रमुख रूप से संस्था के संरक्षक परसराम साहू, सलाहकार मोहित शर्मा, संस्थापक एवं कोषाध्यक्ष संजय कुमार मैथिल, अध्यक्ष मीना भारतद्वाज,उपाध्यक्ष द्वय महादेव जायसवाल एवं मेहत्तर देवांगन, महासचिव विरेन्द्र साहू, संयुक्त सचिव भूपेन्द्र साहू, संगठन महामंत्री, खिलेश वर्मा, सहसचिव मिथिला जायसवाल, कुमारी गंजीर, सुचिता साहू, कार्यालय सचिव मुकेश साहू, अंतिमा कंवर, मनीष साहू, प्रचार मंत्री,देवकुमार वैद्य, हितेन्द्र साहू, भोला राम सिन्हा, मीडिया प्रभारी दिनेश कुरेटी दिलेर एवं लता देवांगन, प्रवक्ता महेश जायसवाल, कार्यकारिणी सदस्यगण योगेश्वर साहू, लोकनाथ तांडेय, हेमंत साहू, तुलसी साहू, महिला प्रकोष्ठ के पदाधिकारीगण अध्यक्ष सुचित्रा सामंत, उपाध्यक्ष प्रज्ञा शर्मा, पुष्पलता पटेल,गीता देवांगन, महासचिव मधु देवांगन, कोषाध्यक्ष सुनीता जनार्दन, संयुक्त सचिव नंदनी देशमुख, सहसचिव ईश्वरी देवांगन, पुष्पांजलि ठाकुर, जयश्री देवांगन, कार्यालय सचिव शशिकला पांडे, ज्योति गजपाल, संगठन महामंत्री वर्षा हरिहारनो, प्रांतीय प्रचार मंत्री लक्ष्मी बघेल,सुकन्या राजपूत, मीडिया प्रभारी कांति नागे, प्रवक्ता विनीता अनुप उइके, कार्यकारिणी सदस्य गण इंदू सोनकर, खुशबू जैन, वर्षा जैन, दीपमाला वैष्णव, वंदिता शर्मा आदि सामिल है।इस अवसर पर शिक्षक कला प्रतिभा अकादमी छत्तीसगढ़ के समस्त प्रांतीय पदाधिकारीगण,सदस्यगण, विभिन्न जिलों के उत्कृष्ट शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं कराटे छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अवैध मदिरा परिवहनकर्ता के विरूद्ध की गई कार्रवाई

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री संजय अग्रवाल के निर्देशानुसार जिले में अवैध मदिरा विक्रेताओं

एवं परिवहन करने वालों पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। सहायक आयुक्त आबकारी श्री यदुनंदन राठौर ने बताया कि जिले में अवैध शराब विक्रेताओं के विरूद्ध धर-पकड़ अभियान के तहत ग्राम धोबाटोला से टिपानगढ़ रोड में ग्राम चोरहा बंजारी थाना गेंदाटोला निवासी कमलेश चन्द्रवंशी के कब्जे से 9 बल्क लीटर देशी मदिरा संतरा अवैध रूप से दो पहिया वाहन स्कूटी हीरो डेस्टिनी बिना नंबर प्लेट पर परिवहन करते हुए जप्त किया गया। आरोपी को धारा 34(2) आबकारी अधिनियम के तहत दण्डनीय अजमांनतीय अपराध में गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल दाखिल किया गया है। कार्रवाई में आबकारी उप निरीक्षक श्रीमती नेहा सिंह एवं हमराह स्टाफ श्री निजाम शाह ठाकुर, श्री नागेश निषाद, श्री अनिल सिन्हा शामिल थे। कलेक्टर ने सभी वृत्त प्रभारियों को वृत्त क्षेत्र में लगातार गश्त करने तथा अवैध मदिरा विक्रय के विरूद्ध प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। सहायक आयुक्त आबकारी ने बताया कि जिले में अवैध मदिरा विक्रेताओं एवं परिवहन करने वालों पर लगातार कार्रवाई जारी रहेगी।

सीईओ जिला पंचायत ने ग्रामीण क्षेत्र में चल रहे विभिन्न कार्यों का लिया जायजा

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह ने राजनांदगांव विकासखंड के ग्रामों में चले

रहे विभिन्न कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने ग्राम खैरझिटी, बरबसपुर, बघेरा, जोरातराई में घर-घर कचरा संग्रहण कार्य एवं अपशिष्ट पदार्थों के प्रबंधन कार्य का जायजा लिया। इसके साथ ही उन्होंने शौचालय, सामुदायिक सोखता गड्ढा, स्वच्छता, श्रमिकों से संबंधि कार्य सहित विभिन्न कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान सहायक परियोजना अधिकारी, सीईओ जनपद पंचायत सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी तथा ग्रामवासी उपस्थित थे।

शोहदाय कर्बला कमेटी के सदर बने नईम कुरैशी

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। हर साल की तरह इस साल इमाम हजरत हुसैन साहब की याद में मोहर्रम मनाया जाता है, जिसमें 10 रोजा

तकरीरी प्रोग्राम व और भी प्रोग्रामों को अंजाम दिया जाता है, जिसके इंतेजमात के लिए शोहदाय कर्बला कमेटी इस काम को अंजाम देती है। इस बार इसके सदर के तौर पर आम जमात की राय से नईम कुरैशी साहब को इसका सदर बनाया गया है, जो कि इस काम को अंजाम देंगे। सदर बनने पर जामा मस्जिद के सदर हाजी रईस अहमद शकील, हन्फी मस्जिद के सदर मोहम्मद हाफिज साहब, जलालबाग दरगाह के सदर हाजी मंसूर अंसारी, अल अजीज मस्जिद के सदर हाजी रज्जाक बड़गुजर, तुलसीपुर मस्जिद के सदर सैय्यद गुड्डू भाई, कब्रिस्तान कमेटी के सदर जलालुद्दीन निर्बान, मोहद्दीसे आजम स्कूल के सदर हाजी तनवीर अहमद, रशीद खान, अब्दुल कादिर अशरफी, सुहैल रिजवी, हैदर जोया, शकील रिज़वी, राजिक खान राजा, हफीज वारसी, शेख सलीम, आफ्ताब अहमद, शानु खां, रेहान कुरैशी सभी ने मुबारकबाद पेश की।

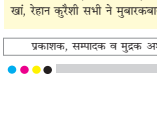

बुढ़ासागर की तरह निगम की दुकानों के किराये में भी लगभग 16 करोड़ का भष्ट्राचार जाँच हुई तो उजागर होगा - ओस्तवाल

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। शहर की जन-जन की आवाज एंव पूर्व पार्षद हेमंत ओस्तवाल ने एक पत्र के माध्यम् से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय नगरीय प्रशासन मंत्री अरूण साव संचालक नगरीय प्रशासन एवं राजनांदगावं जिले के कलेक्टर एवं निगम आयुक्त से यह माँग की है कि, जिस तरह से निगम में बुढ़ासागर सौदर्यीकरण के कार्यो में भष्ट्राचार हुआ उसी तर्ज पर निगम की मालिकाना हक की

जिन नये पांचो शॉपिग कॉम्पलैक्स की दुकानों का किराया किसकी जेब में जा रहा है उसकी नीलामी के बाद किराये के रूप में जो राशि निगम आयुक्त के खाते में किरायेदारों से अनुबंध कराकर के जमा करायी जानी थी। लेकिन किराया राजस्व विभाग के किस अधिकारी के जेब में जा रहा है? यह गंभीर जांच का मामला है। एवं दुकानों की नीलामी की अवधि लगभग 9-10 वर्ष हो रही है और यदि जिम्मेदार निर्वाचित जन प्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी यदि शासन हित और जनहित की जरा भी यदि चिंता ईमानदारी की है तो इन समाचार पत्रों को संज्ञान में लेते हुए पूर्व में मेरे द्वारा दुकानों के मामलों की शिकायत डॉ. रमन सरकार और भूपेश बघेल की सरकार में भी अनेको बार की गई थी और गतदिनों निगम आयुक्त के निर्देशानुसार टांका घर के दुकानों का सील लगाने का मामला जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है और टांकाघर दुकान की 38 लाख रूपयें की लगभग राशि की शिकायत भी मेरे द्वारा एक सप्ताह पूर्व की गई है उसको भी संज्ञान में लेते हुए वर्तमान भाजपा सरकार के मुखिया जो वर्तमान में डबल इंजन की सरकार ने स्पष्ट रूप से विष्णुदेव साय जी और नरेन्द्र मोदी जी यह कह रहे है कि, भष्ट्राचारियों का स्थान जेल में होगा लेकिन क्या भाजपा सरकार में राजनांदगांव नगर निगम की मालिकाना हक की दुकानों के पाँचों नये शॉपिंग कॉम्पलैक्स दुकानों की किराये की राशि की सम्पूर्ण जाँच कराने की हिम्मत जिस जनप्रतिनिधि और प्रशासन के अधिकारियों की है तो वे निगम की किराये की राशि की जाँच का आदेश समय- सीमा का निर्धारण करते हुए तत्काल इस निगम के सबसे भष्ट्राचार का खुलासा करवाये जिससे की शहर की आम जनता और प्रदेश की जनता को यह मालूम हो जाये की भाजपा के नेता चुनाव के पूर्व जो भष्ट्राचार के खिलाफ बड़ी-बड़ी बाते और छत्तीसगढ़ राज्य को भष्ट्राचार के नाम से बदनाम करने का आरोप भूपेश बघेल की कांग्रेस सरकार पर लगाये थे लेकिन अब तो भाजपा की प्रदेश में स्पष्ट बहुमत की सरकार है लेकिन राजनांदगांव नगर निगम में जो अधिकारियों-कर्मचारियों की मिली भगत के चलते जो भष्ट्राचार के मामले दबाये जा रहे है। उससे प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी की गरिमा कम हो रही है।

गायत्री विद्यापीठ में शिक्षाविद श्रीमती शैलजा नायर ने प्राचार्य का पदभार ग्रहण किया

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। शिक्षा व संस्कार के क्षेत्र में अग्रणी जिले की प्रतिष्ठित शाला गायत्री विद्यापीठ सीबीएसई बोर्ड में नव-नियुक्त प्राचार्य के रूप में श्रीमती शैलजा नायर ने पदभार ग्रहण किया। ज्ञात हो कि श्रीमती नायर जिले की ख्याति लब्ध शिक्षाविद के रूप में जानी जाती रही है जो अपने कुशल नेतृत्व क्षमता एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बना चुकी है। उन्होंने अपने सरल व्यवहार से सभी को प्रभावित किया है। इस अवसर पर गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री बृजकिशोर सुरजन, उपाध्यक्ष श्रीमती संध्यादेवी सिंघल, श्री राजेश जैन, सचिव श्री गगन

लड्ढा, सहसचिव निकुंज सिंघल, कोषाध्यक्ष सूर्यकान्त चितलांग्या, संरक्षक श्री नंदकिशोर सुरजन, श्रीमती सुषमा सुरजन, सांस्कृतिक प्रभारी श्री हरीश गांधी, श्रीमती रूपाली गांधी, एकेडमिक प्रभारी श्री अमित उत्तलवार प्राचार्य श्रीमती पिंकी खण्डेलवाल, उप प्राचार्य श्रीमती रश्मि ठाकुर, प्रशासक अनिल वाजपेयी एवं समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं ने श्रीमती शैलजा नायर को शुभकामनाएं देते हुए उनेक उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की है।

कलेक्टर ने आंगनबाड़ी केन्द्रों का किया निरीक्षण

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने वजन त्यौहार के पहले दिन आज राजनांदगांव शहर के शंकरपुर वार्ड, कन्हारपुरी वार्ड के आंगनबाड़ी केन्द्र तथा ग्राम सुंदरा के आंगनबड़ी केन्द्र का निरीक्षण किया। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल के मार्गदर्शन में जिले में बच्चों के पोषण स्तर में सुधार और उसके आंकलन के लिए आज 13 मई से आगामी 22 मई 2024 तक सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों में वजन त्यौहार का आयोजन किया जा रहा है। इसमें 6 वर्ष तक आयु के सभी बच्चों का वजन लिया जाएगा और उनके वास्तविक वजन आंकलन तथा पोषण स्तर का आंकलन किया जाएगा। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने स्वयं बच्चों का वजन और ऊंचाई ली। उन्होंने बच्चों के पोषण स्तर की नियमित निगरानी करने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी बच्चे का वजन अचानक कम होता है तो उस पर विशेष ध्यान दें।

जीवनदायिनी के साथ साथ मोक्षदायिनी भी है मां गंगा - अरविन्द तिवारी

गंगा जयंती पर विशेष रिपोर्ट

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को माँ गंगा स्वर्ग लोक से शिवशंकर की जटाओं में पहुँची थी इसलिये इस दिन को गंगा जयंती या गंगा सप्तमी के रूप में मनाया जाता है। हिंदू धर्म में पापनाशिनी और मोक्षदायिनी गंगा का विशेष महत्व है। गंगा को माँ का दर्जा प्राप्त है। जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी अनुष्ठानों में माँ गंगा के जल का प्रयोग किया जाता है। इस दिन गंगा नदी में स्नान करने से सभी तरह के पाप मिट जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन घर पर स्नान करते समय पानी की बाल्टी में गंगा जल की कुछ बूंदों का डालकर स्नान करना चाहिये , इससे जीवन के सभी दुखों से मुक्ति मिल जाती है और इसके अलावा इस दिन दान-पुण्य को भी विशेष महत्व दिया जाता है।

इस संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुये अरविन्द तिवारी ने बताया एक पौराणिक कथा के अनुसार पर्वतराज हिमालय और सुमेरू पर्वत की गंगा बड़ी पुत्री थीं जो पृथ्वी पर आने से पहले सुरलोक में रहती थी। गंगा अत्यन्त प्रभावशाली और असाधारण दैवीय गुणों से सम्पन्न थी। पतितपावनी माँ गंगा का जन्म वैशाख माह की शुक्लपक्ष तृतीया को पर्वतराज हिमालय के घर में प्रथमपुत्री के रूप में हुआ। इस दिन को अक्षय तृतीया नाम से भी जाता है सत्ययुग का आरंभ भी इसी तिथि को हुआ। ञ्च वैशाखे मासि शुक्लायां तृतीयायां दिनार्धके। बभूव देवी सा गंगा शुक्ला सत्ययुगाकृतिः।। वर्तमान वैवस्वत मन्वंतर के भोगकाल में गंगा जी के पृथ्वी पर आगमन का श्रेय इक्ष्वाकु वंश के राजा भगीरथ को जाता है। इसी वंश के राजा चक्रवर्ती सम्राट सगर ने महर्षि और्व की आज्ञा से सौ अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प लिया और निन्यानबे अश्वमेध यज्ञ पूर्ण भी कर लिये। विधि के विधान के अनुसार कोई भी प्राणी यदि वह सौ अश्वमेध यज्ञ सविधि

संपन्न कर लेता है तो इंद्रपद का अधिकारी हो जाता है। इसी भय से देवराज इंद्र ने सौवें अश्वमेध यज्ञ के अश्व का हरण करके गंगासागर में तपस्या कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया। अपने पिता की आज्ञा से सगर के साठ हजार पुत्रों ने अश्व की खोज करते हुये सारी पृथ्वी खोद डाली जो सागर के नाम से भी प्रसिद्ध है। उन सभी पुत्रों ने कपिल मुनि के आश्रम में बंधे हुये अश्व को देखकर शोर मचाना आरंभ कर दिया जिसके परिणामस्वरूप कपिल मुनि की समाधि भंग हो गयी और उन्होंने अपनी क्रोधाग्नि में सगर सभी साठ हजार पुत्रों को भस्म कर दिया। राजा सगर की दूसरी पत्नी से उत्पन्न असमंजस के पुत्र अंशुमान पितामह सगर की आज्ञा से अश्व को खोजने निकल पड़े और वे वहीं पहुँचे जहां उनके पितृ भस्म होकर राख की विशाल राशि बन चुके थे। अंशुमान ने बड़े करुणभाव से महर्षि कपिल की स्तुति की। उनकी स्तुति प्रसन्न होकर कपिल मुनि ने कहा वत्स ! यह तुम्हारे अश्वमेध यज्ञ का अश्व है इसे ले जाओ। मेरी क्रोधाग्नि से भस्म हुये तुम्हारे पितृगण गंगाजल की प्रतीक्षा कर रहे हैं यह गंगाजल पाकर ही स्वर्ग जा सकते हैं अन्यथा नहीं। मैं तुम्हें गंगा को पृथ्वी पर लाने का उपाय बता रहा हूँ उसके लिये तुम प्रयत्न करों। हे कुलश्रेष्ठ ! गंगा हिमालय की ज्येष्ठ कन्या है उनके स्पर्श से तुम्हारे सभी पितृ स्वर्ग को प्राप्त होंगे। कपिलमुनि की आज्ञा मानकर अंशुमान अश्व लेकर लौट आये और पृथ्वी पर गंगा को लाने के लिये अनेकों वर्षों तक घोर तपस्या की किंतु वे सफल नहीं हुये और स्वर्ग सिधार गये। अंशुमान के पुत्र महाराज दिलीप में भी गंगा को पृथ्वी पर लाने का कठोर प्रयास किया किंतु वे भी सफल नहीं हुये। दिलीप के पुत्र राजा भगीरथ ने मंत्रियों को राज्य का कार्यभार सौंपकर गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये एक पैर पर खड़े होकर कठिन तपस्या करने लगे। उनका सारा शरीर सूख गया केवल अस्थियाँ ही शेष रह गयी । उनकी कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर माँ गंगा ने उन्हें दर्शन देकर वर माँगने को कहा , तब भगीरथ ने हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुये कहा — माँ ! मेरे पितरों को मुक्ति प्रदान करो। माँ गंगे ने कहा ङ्क वत्स में अवश्य चलूँगी परंतु पृथ्वी पर मेरे वेग को कौन सम्हालेगा जब मैं अपने वेग के साथ आकाश से चलूंगी तो पृथ्वी को भेदकर रसातल में चली जाऊँगी। माँ गंगा की बात सुनकर महाराज ने कहा कि भगवान सदाशिव आपको धारण करेंगे, अतः मुझ पर कृपा करके वहां चलने की स्वीकृति प्रदान करें। भगवती गंगा अपने तीव्र प्रवाह के साथ नीचे उतरीं और भगवान शिव ने उन्हें अपनी जटा में धारण किया। भगीरथ की प्रार्थना से महादेव ने जटा के एक भाग को निचोड़ दिया। गंगा विशाल धारा में परिवर्तित होकर महाराज भगीरथ के पीछे चल पड़ीं। मार्ग में महर्षि जह्नु यज्ञ कर रहे थे, भागीरथ ने उन्हें प्रणाम करने के लिये आश्रम में प्रवेश किया तभी यज्ञशाला में गंगा की धारा प्रवाहित होने लगी ऐसा होते देख महर्षि ने समस्त गंगाजल का पान कर लिया। पुनः भगीरथ की प्रार्थना से संतुष्ट होकर महर्षि अपने जह्नु (जंघा)से गंगा को प्रकट किया इसीलिये गंगा जह्नु पुत्री भी कहलायी। जिस दिन महर्षि जह्नु ने अपने जांघ से गंगा को प्रकट किया उस दिन दिन वैशाख शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि थी तभी से इस तिथि को गंगा सप्तमी के नाम से जाना जाता है। माँ गंगा ने महर्षि जह्नु से कहा- अहं तव सुता तात यतस्त्वदेह निर्गता। अद्य प्रभृति मे नाम जाह्नवीत्य भवत्पितः। मैं आपकी पुत्री हूँ क्योंकि मैं आपकी जंघा से निकली हूँ। हे ! तात आज से मेरा एक नाम जाह्नवी होगा और जो प्राणी मेरे जाह्नवी नाम का स्मरण करेंगे वे सभी पापों से मुक्त हो जायेंगे।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक अशोक कुमार पाण्डे द्वारा आसमा पब्लिसर्श इंडिया (प्रा.) लिमिटेड रायपुर से मुद्रित व गंजचौक राजनांदगांव से प्रकाशित, सम्पादक- अशोक कुमार पाण्डे, प्रबंध सम्पादक- श्रीमती कल्पना पाण्डे । मोः 94252-43311 Email: nandgaontimes@gmail.com